‘अस्पताल के बाहर टेलीफोन’ कविता संग्रह के लिए पवन करण को मिला केदार सम्मान : केदार शोध पीठ, बाँदा द्वारा हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद के सभागार में आयोजित भव्य समारोह के दौरान ‘अस्पताल के बाहर टेलीफ़ोन’ कविता संग्रह के लिए कवि पवन करण को केदार सम्मान,2011 से सम्मानित किया गया।

कवि पवन करण को केदार सम्मान 2011 से सम्मानित करते हुए प्रो.नामवर सिंह, विभूति नारायण राय, दूधनाथ सिंह व अन्य महानुभाव।

सम्मान समारोह में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलाधिपति प्रो.नामवर सिंह, भारत भारद्वाज, दूधनाथ सिंह, पवन करण व महेश कटारे मंचस्थ थे। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूति नारायण राय ने समारोह की अध्यक्षता की।

केदार सम्मान समारोह के दौरान उदबोधन देते प्रो. नामवर सिंह, मंच पर बाएं से प्रो.संतोष भदौरिया, विभूति नारायण राय, दूधनाथ सिंह, पवन करण व महेश कटारे।

बतौर मुख्य अतिथि नामवर सिंह बोले, पवन करण की कविताओं में बैचेनी, तड़प दिखायी देती है। ऐसी सादगी और सरलता महानगरों के लेखकों में कम देखने को मिलती है। इन्होंने अपनी निजता की रक्षा की, पहले दो-चार मुहावरों और छंदों को लेकर कविताएं लिखी जाती थी, पवन करण ने इससे इतर अपनी एक अलग पहचान बनायी।

बकौल दूधनाथ सिंह, केदारनाथ अग्रवाल शताब्दी वर्ष के समापन अवसर पर यह कहना चाहता हूं कि उनको नए सिरे से पढ़ने की जरूरत है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता में क्या नहीं है, का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि केदारनाथ अग्रवाल की कविता में कोई अंतर्विरोध के तत्व दिखाई नहीं देते हैं। उनकी कविता तनाव से तनी नहीं हैं। पढ़ने पर सोचने की गुंजाइश नहीं मिलती है। इनकी कविताएं वैचारिक उद्विग्नता की ओर नहीं ले जाती हैं। उन्होंने केदार को मुक्तकों का कवि बताया।

कथाकार महेश कटारे ने पवन करण को अनुभव की प्रयोगशाला में आवाजाही का कवि बताया। पुस्तक वार्ता के संपादक भारत भारद्वाज ने विस्तार से पवन करण के कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस दौरान केदार सम्मान 2011 से सम्मानित कवि पवन करण ने कहा कि सभागार में साहित्य प्रेमियों को देखकर मैं अभिभूत हूं।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय बोले, पवन करण की कविताओं में छोटे तत्व भी बड़े कंसर्न की ओर ले जाते हैं, जो इन्हें विशिष्ट कवि बनाते हैं। इनकी कविता का स्त्रोत, आज का हमारा जीवन और समाज का यथार्थ है। इन्होंने हमारे समय के हाशिए के लोगों पर कलम चलायी है, ऐसे कवि को यह सम्मान देना सार्थक साबित होता है।

प्रस्तुति- अमित विश्वास
सहायक संपादक
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
मो.09970244359